रामकथा :
जीवन, साहित्य एवं कला में

(दक्षिण भारत के विशेष संदर्भ में)

आन्ध्र प्रदेश (सीमांध्र एवं तेलंगाना) ❁ कर्नाटक ❁ तमिलनाडु ❁ केरल

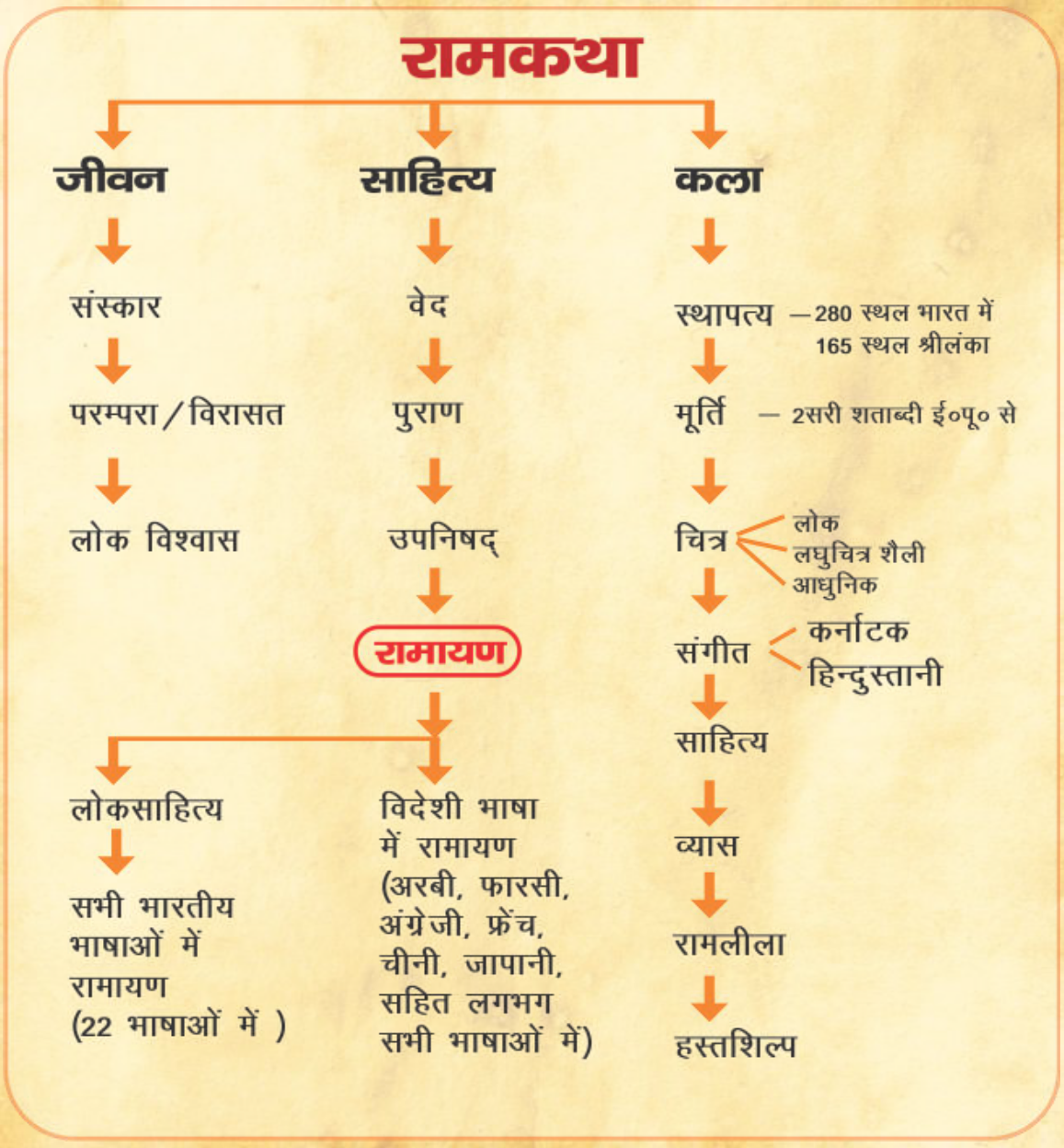

रामकथा

जीवन
- संस्कार
- परम्परा / विरासत
- लोक विश्वास

साहित्य
- वेद
- पुराण
- उपनिषद्
- **रामायण**
  - लोकसाहित्य
    - सभी भारतीय भाषाओं में रामायण (22 भाषाओं में)
  - विदेशी भाषा में रामायण (अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी, जापानी, सहित लगभग सभी भाषाओं में)

कला
- स्थापत्य — 280 स्थल भारत में, 165 स्थल श्रीलंका
- मूर्ति — 2सरी शताब्दी ई०पू० से
- चित्र
  - लोक
  - लघुचित्र शैली
  - आधुनिक
- संगीत
  - कर्नाटक
  - हिन्दुस्तानी
- साहित्य
- व्यास
- रामलीला
- हस्तशिल्प

रामकथा : जीवन साहित्य एवं कला में

(दक्षिण भारत के विशेष सन्दर्भ में)

1. भूगोल एवं जलवायु का संस्कृति पर प्रभाव
2. समाज, साहित्य एवं संस्कृति
3. हिन्दी साहित्य पर समकालीन संस्कृति एव साहित्य का प्रभाव
4. उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत की भौगोलिक एवं राजनैतिक स्थिति की भिन्नता
5. उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत की संस्कृति में समन्वय का आधार

6. दक्षिण भारत की कला में राम

- स्थापत्य
- मूर्ति
- चित्र
- साहित्य
- संगीत
- उपयोगी कला - हस्तशिल्प

8. दक्षिण भारत के साहित्य में राम

भारत की भौगोलिक विभिन्नता उसके सांस्कृतिक विभिन्नता में भी परिलक्षित होती है। उत्तर एवं दक्षिण भारत की संस्कृति कला एवं साहित्य में पर्याप्त भिन्नता है। यद्यपि क्रमशः संस्कृति-साहित्य बोली का सर्वेक्षण किया जाय तब परिवर्तन नही दिखाई पड़ता है, परन्तु तीव्रगति से स्थान बदलने पर यह नितान्त भिन्न दिखाई देती है।

ऊपर से इठलाती भागती नदी हर मोड़ पर नयी दिखती है परन्तु उसकी अर्न्तवर्ती धारा एक होती हैं, समानता उसके जीवन का आधार भी है। उसी भाँति संस्कृति के बहुत सारे तत्व ऊपर से भिन्न दिखते हुए भी अन्दर से एक है, समान होते हैं, यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है, और यही तत्व राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए संस्कृति की जीवनी शक्ति भी बनते है।

साहित्य सृजन, समाज सापेक्ष है, जो साहित्य, समाज सापेक्ष सृजित नहीं होता उसे समाज स्वयं निरस्त कर देता है।

हिन्दी साहित्य की चर्चा करते समय समकालीन संस्कृति एवं साहित्य को केन्द्र में रखकर ही सार्थक विचार किया जा सकता है। जैसे हिन्दी साहित्य का आदिकाल, भक्ति काल भारत वर्ष की सभी बोलियों, भाषाओं एवं संस्कृतियों से पूर्णतः प्रभावित है, उसका आप पृथक से सार्थक मूल्याकंन कर ही नही सकते-

''भक्ति द्रविड़ उपजी लाये रामानंद''

आदि शंकराचार्य के द्वारा मठों की स्थापना के पीछे की भावना, समानता एक ही है। भारतीय चिन्तन में आदिकाल से ही सबसे बड़ी समस्या उत्तर दक्षिण के समन्वय तथा एकीकरण की थी। कारण बहुत स्पष्ट था कि जलवायु एवं भूगोल ने दोनों के बीच में एकता के कोई तत्त्व छोड़े ही नही। मनीषीयों को समन्वय का एक ही सूत्र मिला वह संस्कृति ही थी। इसलिये साहित्य का अध्ययन अध्यापन करते समय संस्कृति को साथ लेकर चलना, समझना तथा प्रस्तुत करना साहित्य को समझने में भी सहायक होना तथा सार्थक भी बन पड़ेगी।

साहित्य जीवन के लिये हैं जिसमें वर्तमान प्रश्नों के उत्तर विरासत से लिये जाते हैं।

रामकथा : इस रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा बनी रहेगी कि उसने न केवल अपने समय के प्रश्नों के उत्तर दिये अपितु आगामी समयों के जटिल प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

राम का जन्म उत्तर भारत में हुआ तथा विवाह उत्तर-पूर्व जनकपुर में।

राम-जानकी मार्ग के रूप में राम ने उत्तर भारत के सम्पूर्ण पूर्वांचल का स्थलीय सर्वेक्षण कर ऋषि, मुनियों से भेंट आर्शीवाद प्राप्त किया।

राम वनवास के माध्यम से राम को सीधे दक्षिण-भारत को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। अवध राज्य के बिल्कुल समीप बुन्देलखण्ड के दुर्गम जंगलों में 11 वर्ष से अधिक समय व्यतीत करते हुए राम ने चित्रकूट में दक्षिण भारत की पूरी जानकारी प्राप्त की। फिर, राम की यात्रा म०प्र० से होते हुए छत्तीसगढ , उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु तक पहुंची। यही राम का मिलन हनुमान से होता है। यह मिलन जितना अध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है उससे कम सांस्कृतिक एवं साहित्यक रुप में नही है।

राम एवं हनुमान उत्तर एवं दक्षिण संस्कृति के समन्वय के प्रतीक है। वे सूत्रधार एवं आधार भी बने।

राम ने वन में रहने वाले 'नर' को सर्वश्रेष्ठ स्थान, सम्मान एवं आत्मीयता दी तो हनुमान ने राम के अनन्य सेवक बन उनका हर कार्य किया। परिणाम यह निकला की हनुमान 'राम' से ज्यादा पूजे जाने लगे। यह उदाहरण उत्तर दक्षिण के समन्वय एवं उसके परिणाम का सशक्त उदाहरण है।

"भरत भाई, कपि से उऋण हम नाहीं"

राम वन गमन मार्ग

जहँ जहँ चरण पड़े रघुवर के
भारत - श्रीराम के यात्रा स्थल
भारत
अफगानिस्तान
पाकिस्तान
जम्मू और कश्मीर
नेपाल
भूटान
बिहार
गुजरात
राजस्थान
महाराष्ट्र
उत्तर प्रदेश
झारखण्ड
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
उड़ीसा
म्यांमार
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
श्री लंका
हिन्द महासागर

Map of Rama's itinerary, while on exile from Ayodhya to Rameshwaram

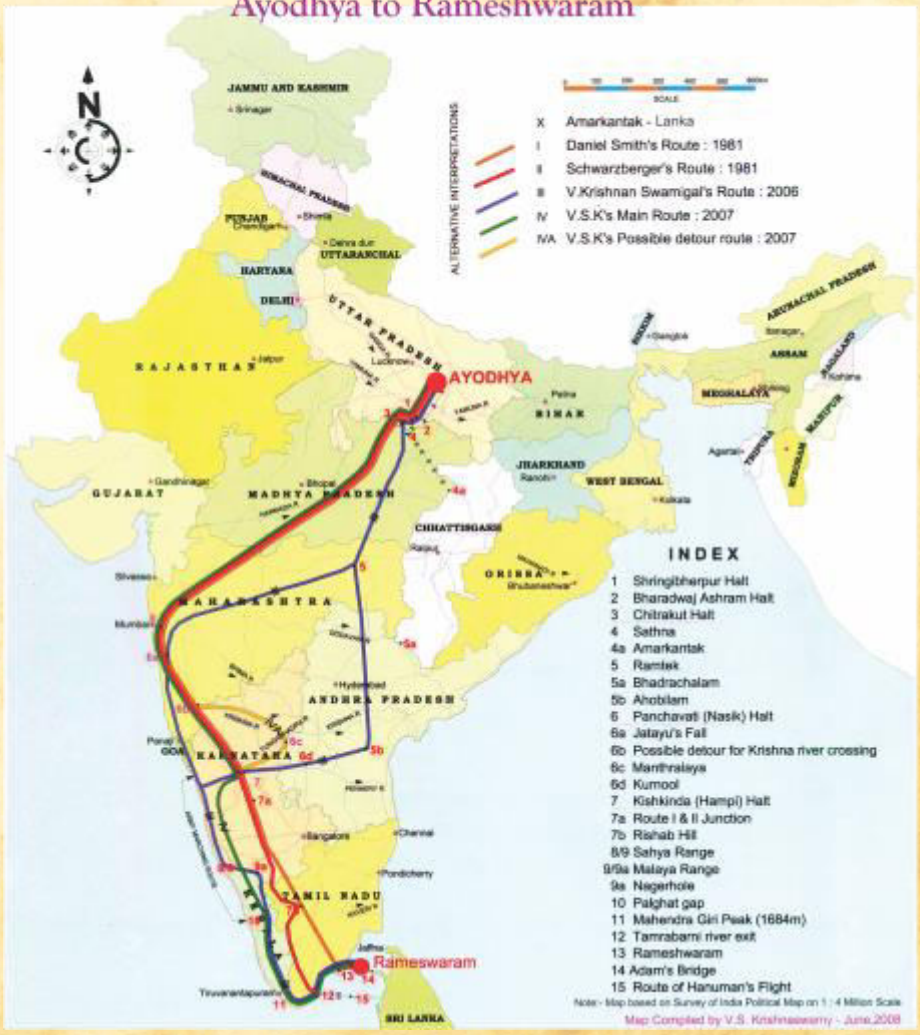

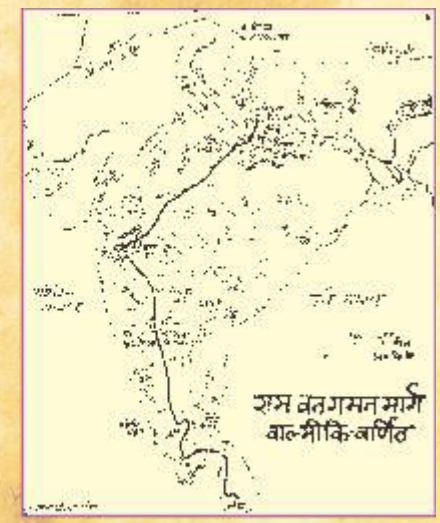

।। स्थापत्य ।।

कर्नाटक

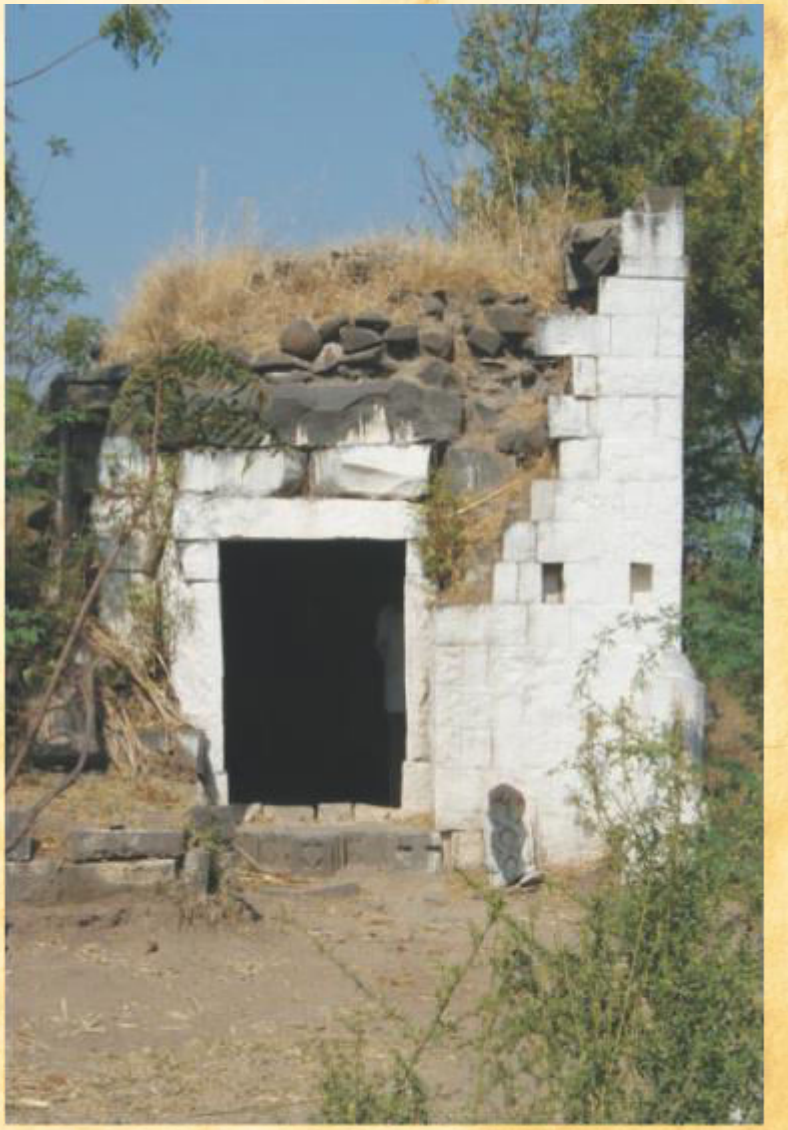

रामेश्वर

रामतीर्थ (भीमा), बेलगाँव, कर्नाटक

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां भगवान शिव श्रीराम से सपरिवार मिलने आये थे।

रामलिंग

आलमेल (बोरी, बीजापुर, कर्नाटक)

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां श्रीराम ने शिव लिंग की स्थापना की थी।

शिव मंदिर

जमखंडी (भीमा), बागलकोट, कर्नाटक

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहाँ श्रीराम ने भगवान शिव की पूजा की थी।

शबरी आश्रम

सुरेवान, बेलगाँव, कर्नाटक

वाल्मीकि रामायण 3/74 पूरा अध्याय,
श्री रामचरित मानस 3-33.3 से 3-36 दोहा तक

यहां श्रीराम और शबरी माँ की भेंट हुई थी।

शबरी आश्रम
सुरेवान, बेलगाँव, कर्नाटक
यहाँ श्रीराम और शबरी माँ की भेंट हुई थी।

ऋष्यमूक पर्वत

हम्पी (तुंगभद्रा), कोपल, कर्नाटक

वाल्मीकि रामायण 3.64/1 से 4/2, 5, 6, 7, 8, 10,11
पूरे अध्याय 4/12/1 से 13., श्री रामचरित मानस 4.0/1; 4/3/12

यहां श्रीराम और सुग्रीव की भेंट हुई थी।

प्रस्रवण पर्वत

हम्पी (तुंगभद्रा), बिल्लारी, कर्नाटक

वाल्मीकि रामायण 4/27, 28 पूरे अध्याय 4/30/1 से 4/31/15 तक,
4/38/15 से 4/47 तक पूरा अध्याय,
श्री रामचरित मानस 4/11/5 से 4/18/4; 4/20 दोहा से 4/22/6

राम श्रीराम ने वर्षा के चार महीने बिताये थे।

कर सिद्धेश्वर मंदिर

रामगिरि, चित्रादुर्ग, कर्नाटक

वा.रा. 6/4/9 से आगे पूरे अध्याय मानस 5/34/4 से 5/34/6 तक

यहां श्रीराम ने भगवान शिव की पूजा की थी।

हाल रामेश्वर

हेसदुर्ग के पास, चित्रादुर्ग, कर्नाटक

उन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

लंका अभियान पर जाते हुए श्रीराम ने शिव मंदिर की स्थापना की थी।

भैरव मन्दिर

मनकत्तूर, हसन, कर्नाटक

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

स्थान के कुप्रभाव से वहां लक्ष्मण जी को मतिभ्रम हो गया था।

शिव मंदिर

गावी रायन बेट्टा (कावेरी), मैसूर, कर्नाटक

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां श्रीराम ने गावी राक्षस का वध तथा दशरथ जी का श्राद्ध किया।

तमिलनाडु

श्रीराम मंदिर

अयोध्या पट्नम (कावेरी), सेलम, तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य लंका अभियान में श्रीराम इस मार्ग से गये थे।

विष्णु मंदिर
त्रिचुरापल्ली (कावेरी), त्रिचुरापल्ली
जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य
लंका अभियान में श्रीराम कावेरी नदी के
किनारे इसी मार्ग से गये थे।

लिंग शिव मंदिर
पापनाशम् (कावेरी), तंजावूर,
तमिलनाडु
जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य
इस मंदिर की स्थापना श्रीराम ने की थी।

कोदण्डराम मंदिर

वडुवूर (कावेरी), थंजावूर, तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

ऋषियों ने श्रीराम से यहीं रहने का अनुरोध किया था।

शिव मंदिर

गया करै (कावेरी), तिरूवारूर,
तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां श्रीराम ने दशरथ जी का श्राद्ध
किया था।

वेदारणेश्वर मंदिर

वेदरण्यम, नागपट्टिनम, तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहाँ श्रीराम ने भगवान शिव की पूजा की थी।

वीर कोदण्ड राम मंदिर

वडुवूर (कावेरी), नागपट्टिनम, तमिलनाडु

उन मूर्तियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

सेनानायक श्रीराम यहां राक्षसों के प्रति बहुत आवेश में थे।

कल्याण राम मंदिर

मिमिसाइल, पोदुकोटई, तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां ऋषियों को श्रीराम ने योगमाया से अपने विवाह का दृश्य दिखाया था।

नवग्रह तालाब
देवी पट्टनम, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

वाल्मीकि रामायण 7/4/108 से 121
राम श्रीराम ने नवग्रह की पूजा की थी।

दर्भशयनम

त्रिपुल्लाणी, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

वाल्मीकि रामायण 6/21 पूरे अध्याय 6/22/48 से 67 तक, श्री रामचरित मानस 5/49/3 से 5/60/4, 5/57 दोहे से 6/1/1 तक संदर्भ सेतु के अवशेषों से भी संबंधित है।

समुद्र से मार्ग मांगने के लिए यहां श्रीराम तीन दिन तक तपस्यारत रहे।

सेतु अवशेष

छेदुकरई, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य

यहां सेतु की आधार शिला रखी गई थी।

विलुंडी तीर्थ

तंगचिमडम, रामनाथपुरम्,
तमिलनाडु

जन श्रुतियों के आधार पर तथा परिस्थितिजन्य
यहां श्रीराम ने समुद्र में बाण से सेना के
लिए मीठे जल की व्यवस्था की थी।

एकांत राम मंदिर

रामेश्वरम्, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

स्थल श्रुतियों के आधार पर तथा परिनिश्चितात्मक

युद्ध से पूर्व यहां श्रीराम ने एकांत में बैठकर रणनीति पर विचार किया था।

राम झरोखा

रामेश्वरम्, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

वाल्मीकि रामायण ६-४-९२, ९३, यही संदर्भ अग्नितीर्थ का भी है।

यहां खड़े होकर श्रीराम ने समुद्र का सुन्दर दृश्य देखा था।

कोदण्डराम मंदिर

रामेश्वरम्, रामनाथपुरम्, तमिलनाडु

वाल्मीकि रामायण 6/17, 18, 19 पूरे अध्याय, 6/123/121,
श्री रामचरित मानस 5/40/5 से 5/49 का दोहा

यहां विभीषण जी श्रीराम की शरण में आए थे।

रामनाथ मंदिर
रामेश्वरम्, रामनाथपुरम्,
तमिलनाडु

वाल्मीकि रामायण 6/123/19,
श्री रामलिंग माहात्म्य 6/1/2 से 6/2/3
ज्योर्तिलिंग की स्थापना श्रीराम ने की थी।

।। मूर्ति कला ।।

आन्ध्र प्रदेश

राम व लक्ष्मण की सुग्रीव से मित्रता, कटंगुरा,
आंध्रप्रदेश पाषाण, लगभग तेरहवीं शती ई.

राम, सीता व आन्जनेय, चेन्नकेशव मंदिर,
सोमपालेन, चित्तूर जनपद, अ.प्र.
लगभग सोलहवीं शती ई.

राम, सीता व आन्जनेय, चेन्नकेशव मंदिर,
सोमपालेन, चित्तूर जनपद, अ.प्र.
लगभग सोलहवीं शती ई.

राम व लक्ष्मण चेन्नकेशव मंदिर, सोमपालेम,
चित्तूर जनपद, अ.प्र., लगभग सोलहवीं शती. ई.

कर्नाटक

राम व हनुमान, पार्त पुरा, कर्नाटक, ग्रेनाइट
लगभग ग्यारहवीं शती ई.

हनुमान को अंगूठी प्रदान करते हुए राम, हेलबिड, हसन जनपद, कर्नाटक
लगभग १२वीं शती ई.

राम–वानर संधि, अमृतेश्वर मंदिर, अमृतपुर,
चिकमंगलूर कर्नाटक (पाषाण) सन् 1996 *ई.*

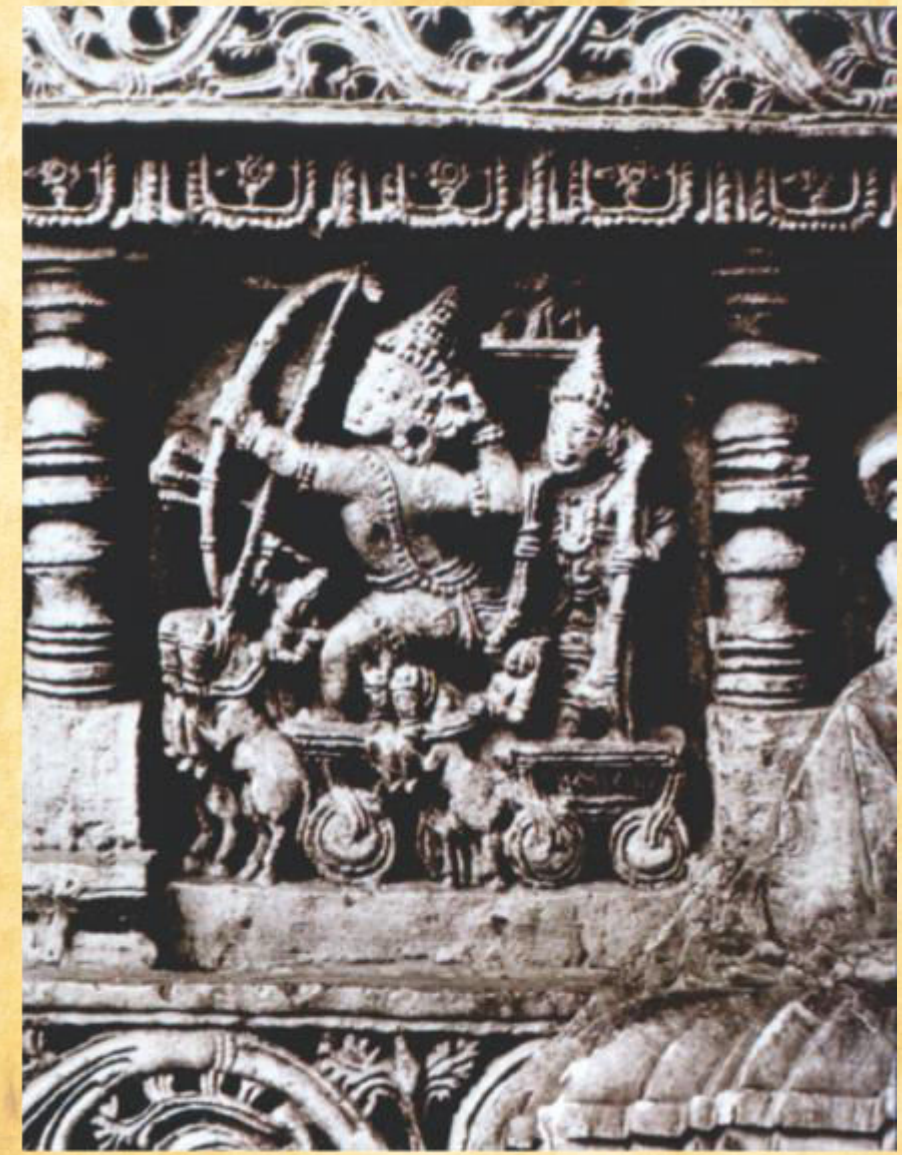

रथ पर आरुढ़ युद्धरत राम, अमृतेश्वर मंदिर, अमृतपुर,
चिकमंगलूर कर्नाटक सन् 1996 *ई.*

हनुमान द्वारा राम को सीता का समाचार,
हजारास्वामी मंदिर, हम्फी, कर्नाटक
लगभग सोलहवीं शती ई.

आन्ध्र प्रदेश

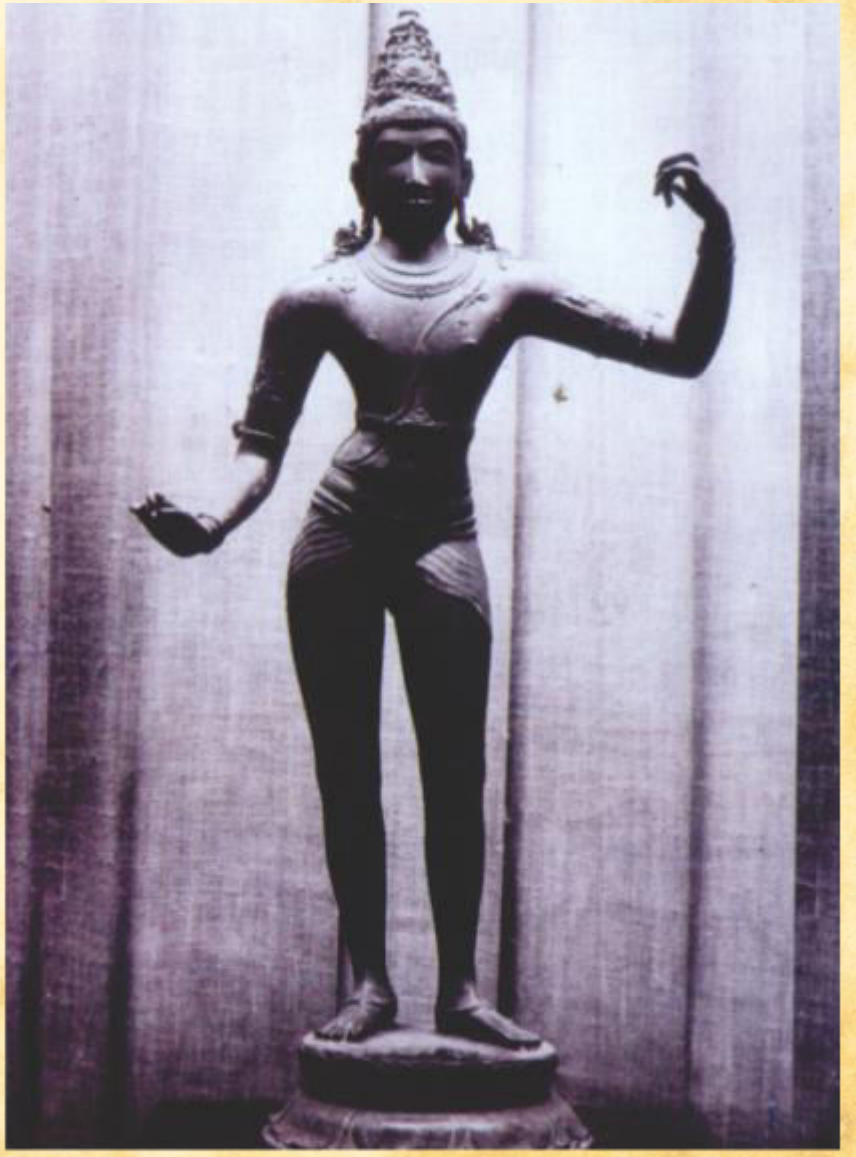

राम वडक्कूपनियूर, तंजौर जनपद, तमिलनाडु
लगभग दसवीं शती ई.

लक्ष्मण, कालेमघ पेरुमल मंदिर, तिरूमागूर,
मदुरै जनपद, तमिलनाडु
लगभग सत्रहवीं शती. ईत्र पाषाण

।। चित्र कला ।।

आन्ध्र प्रदेश

पेन्टिंग, चेरियाल पट्ट, आन्ध्र प्रदेश

राम दरबार, कलमकारी, आन्ध्र प्रदेश

राम दरबार के विभिन्न दृश्य, कलमकारी, आन्ध्र प्रदेश

।। हस्तशिल्प ।।

आन्ध्र प्रदेश

गरुढ़ पर सवार भगवान विष्णु, आन्ध्र प्रदेश

विष्णु का विराट स्वरूप, आन्ध्र प्रदेश

पंचमुखी हनुमान, आन्ध्र प्रदेश

गरुण, आन्ध्र प्रदेश

तपस्वी मुद्रा में हनुमान, आन्ध्र प्रदेश

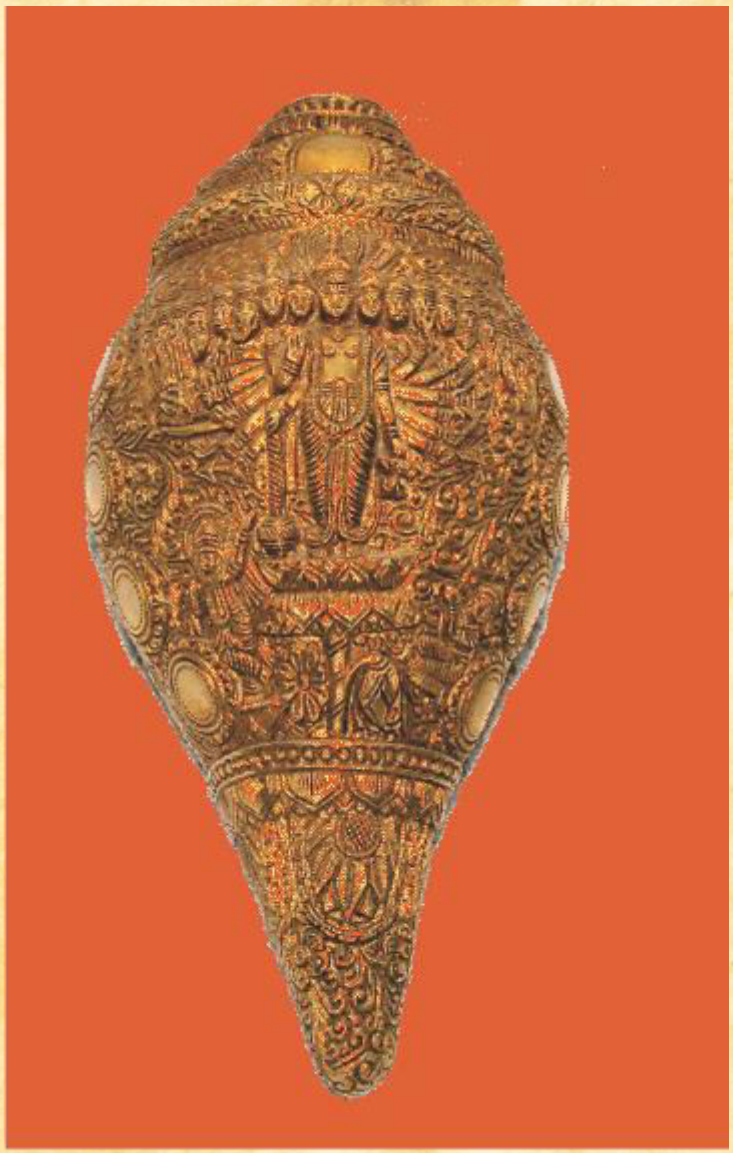

धातु के शंख पर विष्णु का विराट स्वरूप, आन्ध्र प्रदेश

राज्याभिषेक, काष्ठ, आन्ध्र प्रदेश

दशावतार, काष्ठ, आन्ध्र प्रदेश

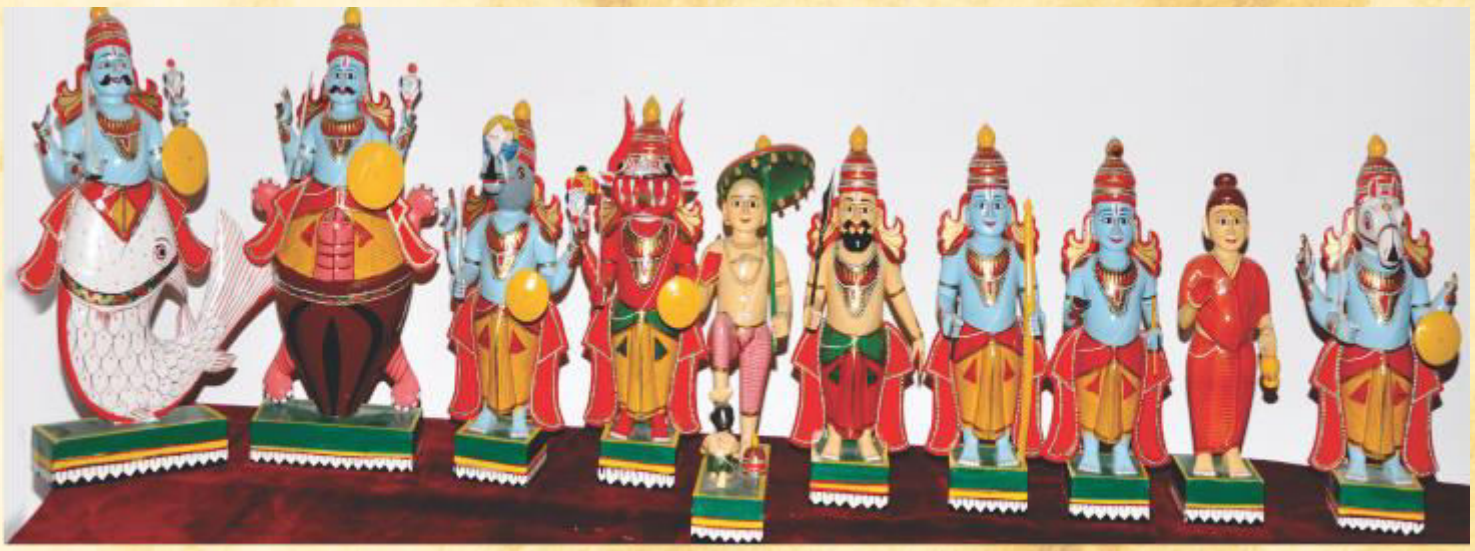

दशावतार काष्ठ, आन्ध्र प्रदेश

दशावतार, चन्दन की लकड़ी, आन्ध्र प्रदेश

राम एवं सीता, चर्म शिल्प, आन्ध्र प्रदेश

हनुमान एवं विभीषण, चर्म शिल्प, आन्ध्र प्रदेश

मेघनाद एवं रावण, चर्म शिल्प, आन्ध्र प्रदेश

रामकथा के विभिन्न चित्र, लकड़ी का पार्टिशन, आन्ध्र प्रदेश

कर्नाटक

राम दरबार, चन्दन की लकड़ी पर, कर्नाटक

चरण पादुका, लकड़ी, कर्नाटक

तमिलनाडु

राम दरबार, धातु, तमिलनाडु

राम दरबार, धातु, तमिलनाडु

कथकली, लकड़ी, केरल

कथकली, पेपरमेशी, केरल

मुखौटे, पेपरमेशी, केरल

दक्षिण भारत के साहित्य में राम

कन्नड़ – तोरवे रामायण

रामचरिन पुरण, पंप रामायण, कुमुदेंदु रामायण
रामविजय काव्य, उत्तर रामायण, अद्वैत रामायण,
मूलक रामायण, मार्कण्डेय रामायण, शंकर रामायण,
अध्यात्म रामायण, मूलबल रामायण, रामकथाभ्युदय,
निरुमलेष चरिते, वरदविट्ठल रामायण,
रामकथावतार, जिन रामायण, अद्भुत रामायण,
रामाश्वमेध, वरदविट्ठल रामायण, रामकथावतार,
अद्भुत रामायण, श्रीराम पट्टाभिषेक, शेष रामायण'

केरल (मलय) – अध्यात्म रामायण किलिप्पाट्टू

रामचरितम, चित्र रामायण

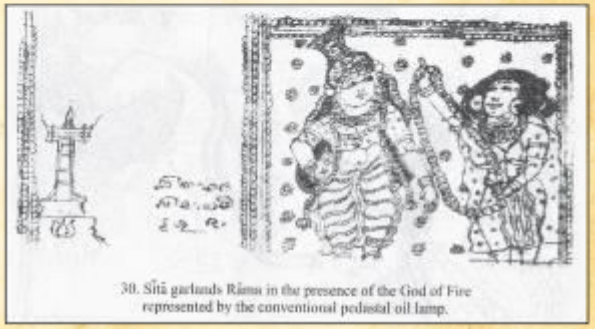

30. Sītā garlands Rāma in the presence of the God of Fire represented by the conventional pedestal oil lamp.

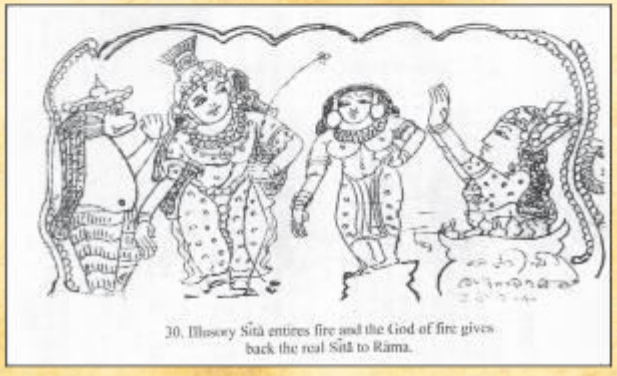

30. Illusory Sītā enters fire and the God of fire gives back the real Sītā to Rāma.

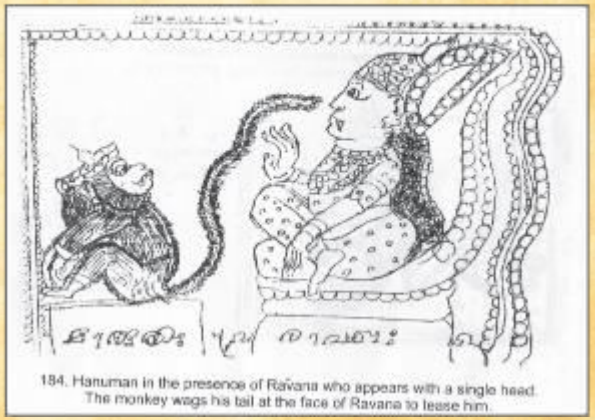

184. Hanuman in the presence of Rāvana who appears with a single head. The monkey wags his tail at the face of Ravana to tease him.

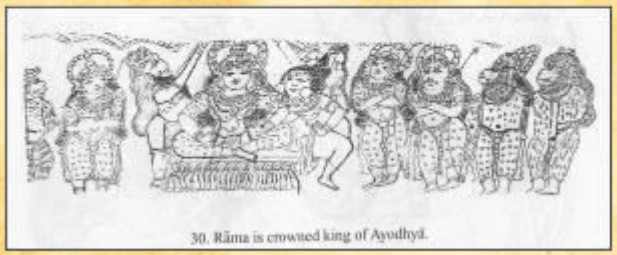

30. Rāma is crowned king of Ayodhyā.

तेलगू –

1. **पद्य रामायण–** भास्कर रामायण, मोल्ल रामायण, रघुनाथ रामायण, गोपिनाथ रामायण, आंध्र वाल्मीकि रामायण, आंध्र श्रीमद्रामायण, श्रीकृष्ण रामायण, रामायण कल्प वृक्ष, निर्वचनोत्तर रामायण, उत्तर रामायण आदि।
2. **द्विपद रामायण–** रंगनाथ रामायण, कट्टा वरदराज रामायण आदि।
3. **प्रबंध काव्य–** रामाभ्युदय आदि।
4. **अनेकार्थी काव्य–** राघव पांडवीय आदि।
5. **शुद्ध तेलुगु काव्य–** शुद्ध तेलुगु रामायण आदि।
6. **चित्र काव्य–** निरोष्ठ्य रामायण आदि।
7. **उदाहरण काव्य–** सीता कल्याण, लक्ष्मण विजय आदि।
8. **राम महिमा काव्य –** सीता रामांजनेय संवाद आदि।

9. **शतक काव्य–** रघुवीर शतक, दाशरथी शतक आदि।

10. **यक्षगान–** सुग्रीव विजय आदि।

11. **गद्य काव्य–** कुशलवोपाख्यान आदि।

12. **नाटक–** उत्तररामायण का अनुवाद, पादुका पट्टाभिषेक आदि।

13. **गीति काव्य–** शारद रामायण, धर्मपुरि रामायण, संक्षेप रामायण आदि।

14. **आलोचना–** रामायण विशेष, षोडशि रामायण रहस्य, रामायण चरित्र, भास्कर एवं रंगनाथ रामायण की भूमिकाएँ आदि।

तमिल – कम्ब रामायण